

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- [dhabeerparasad@gmail.com](mailto:dhabeerparasad@gmail.com)

---

### MEANING AND DEFINITION OF EMOTIONS

संवेग शब्द को अंग्रेजी में एमोशन कहते हैं। एमोशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एमोवेअर से हुआ है जिसका अर्थ हिला देना या उत्तेजित कर देना है। संवेग मनुष्य को झकझोर देता है। जैसे आप किसी क्रोधित व्यक्ति को देखिये, तो उसकी मुट्ठियाँ भिंच जाती हैं, दाँत किटकिटाने लगते हैं, माथे पर सलवटें पर जाती हैं, उसका पूरा शरीर उत्तेजित-सा प्रतीत होता है। संवेग मनुष्य को हिलाकर रख देता है। मनुष्य का संतुलन संवेग की

अवस्था में बिगड़ जाता है, जिस कारण व्यक्ति की बुद्धि ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पाती। परन्तु इससे यह आवश्यक नहीं है कि संवेग काम में बाधक हों। जहाँ संवेग मनुष्य जीवन में कठिनाईयाँ लाता है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति को संवेग में अच्छे कार्य करने की अभिप्रेरणा भी मिलती है। यह बात बिल्कुल सही है कि ठंडे दिमाग से जो कार्य किया जाता है, उसमें मार्ग भ्रष्ट होने का भय बहुत कम होता है। वास्तव में संवेग जीव की शक्ति को उत्तेजित करते हैं और आपातकाल में उसकी बड़ी सहायता करते हैं। संवेग की अवस्था में मनुष्य ऐसे कार्य करता है जो वह सामान्य अवस्था में नहीं कर सकता। लेकिन कभी-कभी संवेग के कारण जीव एकदम स्तम्भित हो जाता है और सामान्य क्रियाएँ भी नहीं कर सकता। कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि संवेग और प्रेरणा में कोई अंतर नहीं है। परन्तु व्यक्ति अपने अनुभव द्वारा यह ज्ञात कर सकता है कि इन दोनों में कितना अंतर है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने शारीरिक क्रियाओं तथा संवेगों में अंतर नहीं किया है।

संवेग को परिभाषित करते हुए कुछ मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि –

पी टी यंग ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि- संवेग सम्पूर्ण व्यक्ति में तीव्र उद्वेग या उपद्रव की अवस्था है जिसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है और जिसमें व्यवहार, चेतन अनुभव तथा अंतरावयवीय कार्य सन्निहित रहते हैं ।

वुडवर्थ ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि- प्रत्येक संवेग एक अनुभूति होती है तथा प्रत्येक संवेग उसी समय एक गत्यात्मक तत्परता होता है ।

जेम्स डेवर के अनुसार-

संवेग जीव की एक जटिल अवस्था है जिसमें श्वास लेना ,नारी गति, ग्रंथि का कार्य इत्यादि व्यापक शारीरिक परिवर्तन तथा मानसिक दशा में तीव्र

अनुभूति के साथ उत्तेजना अथवा विक्षुब्धता की अवस्था तथा एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने की सधारण प्रवृत्ति देखी जाती है ।

इन परिभाषाओं के आधार पर संवेग में पांच तत्व पाए जाते हैं-

1. एक परिस्थिति का उत्पन्न होना
2. जीव द्वारा उस परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण
3. उस परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया के रूप में व्यक्ति का उत्तेजित होना
4. जीव द्वारा उस उत्तेजित अवस्था में सचेतन रूप से अनुभव किया जाना,
5. अनुभव के फलस्वरूप उसमें संवेगात्मक व्यवहार दिखलाई पड़ना ।